Impact Factor: 1.0934 (GIF) ISSN: 2454-7689 Vol: VI Issue: Special July 2021

# समकालीन साहित्य में किसान विमर्श

**डॉ. सलीम बाणदार**
नेहरु कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
घण्टीकेरी हुब्बल्ली

हमारा देश भारत एक कृषिप्रधान और गावों का देश है । यहाँ पर लगभग 65 से 70: आबादी कृषि कार्य पर निर्भर है । इसलिए हमारे देश को 'किसानों का देश' कहना चाहिए । क्योंकि किसान को देश की रीड की हड्डी कहा जाता है । जबसे इस धरती पर जीवन की उत्पत्ति हुई तब से ही किसान खेती करके अनाज का उत्पादन कर रहे हैं । यानि किसान ही सारी दुनिया के लिए भोजन हेतु अनाज, फल, सब्जियाँ और चारे का उत्पादन करते आ रहे हैं । इन धरतीपुत्र किसानों को 'अन्नदाता' भी कहा जाता है । यदि किसान खेती नहीं करेंगे तो अनाज का उत्पादन नहीं होगा और जब अनाज का उत्पादन नहीं होगा तो हमारे भोजन की भी व्यवस्था नहीं होगी। बिना भोजन के हमारा जीवित रहना असंभव है ।

मानव सभ्यता के विकास में कृषि की अमूल्य भूमिका रही है । मानव का अस्तित्व ही कृषि पर टिका है । लकिन आज सारी दुनिया में सबसे ज्यादा दुर्दशा किसानों की ही है । किसान सबके लिए तो अनाज उगा रहे हैं और खुद भूखे मरने के लिए विवश हैं । किसान अपनी खेती से इतना नहीं कमा पाते कि वो अपने परिवार का ठीक – ठाक प्रबंध कर सकें । किसान जितना परिश्रमी और धैर्यवान कोई नहीं है । फिर भी किसान सुखी नहीं है । कभी वो भयानक अकाल (सूखा) की मार से मारा जाता है और कभी प्रलयकारी बाढ़ से । इन आपदाओं से ज्यादा तो किसान कर्ज के बोझ से आत्महत्या करने मजबूर होते हैं । सरकारी और प्रशासनिक व्यवस्था किसान को ही हमेशा हर प्रकार से लूटती रही है ।

समकालीन परिदृश्य को समझने के लिए जब तक हम प्रेमचंद के समय के किसान आन्दोलन को नहीं समझेगें तब तक हम समकालीन साहित्य में किसान विमर्श को नहीं समझ सकते । किसान हमेशा से अभावग्रस्त और समस्याओं से जूझता रहा है । इसके बावजूद भी वह अपने कर्तव्य के प्रति इमानदार रहा है । किसान को आज भी राजनेता, साहूकार, और प्रशासनिक अधिकारी धोखा देते आये हैं । कभी भी किसानों की समस्याओं को समाप्त करने का कोई नहीं सोचता है ।

"1960–70 के दशक में हरित क्रांति आयी ,जिसमें खेती के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े । पंचवर्षीय योजनाओं के तहत नई कृषि नीति को बढ़ावा मिला । कृषि के उत्पादों में वृद्धि हुई । इसका फायदा हर श्रेणी को प्राप्त हुआ । वर्ष 1969 में इंदिरा गाँधी द्वारा बड़े बैंकों, बिमा कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण से गांवों में ऋण आसान शर्तों पर उपलब्ध होने लगा । नाबार्ड ने वाणिज्यिक बैंकों की सहायता से ग्रामीण बैंकों की देशव्यापी श्रृंखला स्थापित की । मृतप्राय दस्तकारियों को जिन्दा किया गया । अनाज, उर्वरक, बिजली आदि पर सरकारी सब्सिडी तथा जवाहर रोजगार योजना से काम के अवसर पैदा हुए । इंदिरा आवास योजना के अंतर्गत दलितों तथा अन्य कमजोर श्रेणियों को सस्ते मकान उपलब्ध कराए गये । " इस प्रकार 70 का दशक किसानों के लिए शुभ संकेत रहा । किसान खुशहाल जीवन बिताने लगे, शहरों की ओर किसानों का पलायन रुका ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी को 1908 में ही किसानों की समस्या का आभास हो गया था, तभी तो वह अपनी रचना ' सम्पत्तिशास्त्र ' में लिखते है कि दृ " जहाँ तक जमीन की उर्वरा या उत्पादक शक्ति की सीमा का अतिक्रमण नहीं होता वहीं तक अधिक खर्च करने से लाभ हो सकता है । आगे नहीं । उत्पादकता की सीमा पर पहुँच जाने पर खर्च बढ़ाने से लाभ के बदले उलटा हानि होती है । ... अंततः फल यह होगा कि पैदावार बढ़ाने की कोशिश में, अधिक पूंजी लगाने और अधिक मेहनत करने पर भी, फी आदमी हिस्सा कम पड़ेगा । धीरे–धीरे यह हिस्सा और कम होता जायेगा । यहाँ तक कि दो–चार वर्ष पैदावार की अपेक्षा खर्च बढ़ जायेगा और उन पन्द्रह आदमियों का गुजारा मुस्किल से होगा । उन्हें जमीन छोड़कर भागना पड़ेगा । "



Edit with WPS Office

आज का किसान कर्ज की समस्या के साथ–साथ बिजली, खाद, पानी आदी की समस्याओं से परेशान है । कभी प्राकृतिक आपदाओं से तो कभी सरकार की नई नीतयों से त्रस्त है । किसानों के फसलों के उचित मूल्य न मिन पाना उनक लिए बहुत बडी समस्या है । किसानों के ऐसी समस्याओं को लकर सूर्यदीप यादव ने 'जमीन' नामक उपन्यास में लिखते हैं– "जमीन किसी की निजी बपौती नहीं होती वह सार्वजनिक सर्व राष्ट्रीय बल्की विश्व की धरोहर होती है । धरती या जमीन की गोद और आकाश की छत्रछाया के बिना हवा की कोख से असंख्य जीव सृष्टि में जन्म लेते हैं और उसे हम मान्य रखते हैं । स्विकार करते हैं जिसे गैर की नाजायज चीज समझ कर अस्विकार करते हैं उस जमीन की उपज यह कृति है ।"

नयी आर्थिक नीति और कृषि क्षेत्र के नये नियम जिससे उत्पादों के दामों में वृद्धि और खेती की साख में गिरावट ने किसानों के उपर कर्ज का बोझ बढ़ाया । इस बोझ ने किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर किया । आज किसान बड़ी संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं । समस्याओं से परेशान होकर, जीवन में घोर हताशा के शिकार होकर अपनी जान दे रहे हैं । देविंदर शर्मा अपनी रचना " वालमार्ट खुद एक बड़ा बिचौलिया है " में लिखते हैं – "हमारी सरकार का मानना है कि रिटेल में एफ डी आई के आने से कृषि व्यवस्था व कृषक जीवन में सुधार होगा । किसानों की आमदनी बढ़ेगी, बिचौलिए खत्म होंगे, उपभोक्ताओं को कम कीमत में सामान मिलेगा । साथ ही कृषि उपज की आपूर्ति में होने वाली बर्बादी पर अंकुश लगेगा । "

"किसानों के आत्महत्या जैसे गंभीर मुद्धों पर लेखक संजीव ने अपनी रचना ' फंस ' में बेबाकी से लिखे हैं । इस उपन्यास महाराष्ट्र क यवतमाल जिले के गांव बनगांव का चित्रण है । साथ ही कर्नाटका और आंध्र प्रदेश के किसानों की समस्याओं की कथा है । इस उपन्यास में लेखक बतात हैं कि कैसे किसानों को जी,एम बीजों के इस्तेमाल करने के लिए कर्ज दिया गया । और इसी कर्ज ने उन किसानों को आत्महत्या की ओर ढकेला ।"

पंकज सुबीर अपने उपन्यास " अकाल में उत्सव " में लिखते हैं दृ "कमला की तोडी बिक गई । बिकनी ही थी । छोटी जात के किसान की पत्नी के शरीर पर जेवर क्रमशः घटने के लिए ही होते हैं । और हर घटाव का एक भौतिक अंत शून्य होता है । जब परिवार की महिला के पास इन धातुओं का अंत हो जाता है तब तय हो जाता है कि किसानी करने वाली बस यह अंतिम पीढी है, इसके बाद अब जो होंगे वह मजदूर होंगे । यह धातुएं बिक बिक कर किसान को मजदूर बनने से रोकती है ।"

किसानों की समस्या को लेकर अनेक रचनाकारों अपनी रचनाओं में अपने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं– समकालीन कथाकारों में शिव मूर्ति का उपन्यास– आखिरी छलांग में सीमांत किसान को आर्थिक उदारीकरण की नीतियों ने किस प्रकार बरबाद किया उसका चित्रण देखने मिलता है । संजीव का फांस इस उपन्यास में– खती के लिए किसान कर्जा लेता है और कर्ज के कारण आत्महत्या कर लता है । पंकज सुबीर का उपन्यास– अकाल में उत्सव, नीलकांत लिखित उपन्यास दृ एक बीघा खेत में चकबंदी और सीमांत किसान की कथा है । कुमेंदु शिशिर का उपन्यास बहुत लंबी राह में ग्रामीण समस्याओं की विकृतियों और संघर्षों का चित्रण है । राजु शर्मा का उपन्यास हलफनामे में किसान आत्महत्या क साथ साथ जल संकट की समस्या का चित्रण है । सूर्यनाथ सिंह का उपन्यास चलती चकी में किसान और उनकी खती, पानी की समस्या देखन मिलता है । मिथिलेश्वर का उपन्यास तेरा संगी कोई नहीं में किसान की त्रासदी, खेतों से किसान की जुडी हुई भावना और नई पीढी का पलायन को प्रस्तुत करता है ।

वर्तमान समय में देश ऐसी स्थिति से गुजर रहा है कि किसान अपने अधिकारों के लिए आंदोलन कर रहे हैं । मगर उनकी समस्याओं को सुनने वाला कोई नहीं है । किसान का जीवन कष्टों से दुःखों से भरा हुआ है फिर भी वह देश के लिए खती करता है, अनाज उगाता है । वह खुद भूखा सोता है मगर दूसरों का पेट भरता है । सबको अपनी–अपनी पड़ी है । मगर किसान को देश और जहान की चिंता है । यही किसान है जो मशाल जलाये हुए है जिससे कुछ उम्मीद जगती हैं । निराला की ये पंक्तियाँ किसानों के लिए और उनकी मेहनत के लिए समर्पित है –

है अमा निशा उगलता गगन घन अंधकार।
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार।



Edit with WPS Office

अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल।
भूधर जो ध्यानमग्न केवल जलती मशाल ।

**संदर्भ ग्रंथ :**


- गिरीश मिश्र दृ'किसान और दुसरे संघर्षशील जन की आर्थिक दशा–दिशा' , "हंस पत्रिका दृ अगस्त 2006" पृष्ठ –108
- सम्पत्तिशास्त्र'– महावीर प्रसाद द्विवेदी , पृष्ठ दृ 47
- जमीन– डॉ.सूर्यदीप यादव– सरिता प्रकाशन, नाडियाद, 2006– पृ– भूमिका से लिया गया है।
- देविंदर शर्मा– "वालमार्ट खुद एक बड़ा बिचौलिया है"– अस्सी चौराहा ई–पत्रिकॉ– 04 अक्टूबर 2012 फाँस– संजीव– वाणी प्रकाशन
- अकाल में उत्सव– पंकज सुबीर– शिवाना प्रकाशन– पृ–78
- राम की शक्ति पूजा– सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'– साहित्य सरोवर – 2018




Edit with WPS Office